Nr. 167 • Mittwoch — Tägliches
Unterhaltungs-Blatt
der Berliner Volks-Zeitung — 19. Juli 1911

à 2000 M. 61299 421 436 526 541 546 887 62013 097 392 444 469 562 701 856 948 63003 171 289 358 438 470 513 574 576 598 640 763 854 888 64387 436 581 705 727 834 883 886 65055 086 191 223 417 460 685 705 814 855 857 885 891 906 997 66082 121 211 290 343 407 447 483 539 647 708 929 67124 154 181 211 240 252 254 277 479 587 633 680 714 810 903 928 951 68037 276 319 366.

10) Oesterreichisch-Ungarische (Französische) Staats-Eisenbahn-Gesellsch., 4% Obligationen von 1900.

Vom Staate zur Selbstzahlung übernommen.

11. Verlosung am 1. Juli 1911. Zahlbar am 1. August 1911.

22601—700 54701—800 56801—843 63101—200 84601—700 86401—500 115501—600 129601—700 160401—500 à 500 Fr.

11) Ottomanische 5% Anleihe von 1896.

15. Verlosung am 4/17. Juni 1911. Zahlbar am 1/14. Juli 1911.

32611—660 33961—34010 011—060 311—360 37011—060 061—110 42761—810 43511—560 61861—910 68411—460 73161—210 311—360 79861—910 81011—060 761—810 82311—360 88711—760 91011—060 102261—310 108311—360 109611—660 114511—560 117711—760 122311—360 130561—610 135361—410 142761—810 144711—760 145361—410.

12) Posener Pfandbriefe.

Verlosung am 23. Juni 1911. Zahlbar am 2. Januar 1912.

4% Pfandbriefe ohne Buchstaben.

Serie VI à 3000 M. 88 808 1059 195 2511 3297 4012 065 438 5511 6429 658 680 993 9913 11040 227 772 825 12120 155 13597 610 696 712 727 14283 299 320 407 624 15215 474 608 797 16163 17192 208 266 523 18005 064 19342 806 834 983 20442 665 700 22017 248 567 684 23232 374 776 24340 459 508 26307 27423 29970 31552 579 32269 33859 34131 615 35577 36947 37489 825 38696 41178 808 42223 43565 44100 358 47495 51691 54108 55299 56089 57053 286 61730 864 883 62025 310 318 367 373 429 430 432 471 555 560 571 618 638 640 648 675 678 708 728 63501 534 719 64087 323 740 980 65278 342 410.

Serie VII à 1500 M. 330 373 608 673 709 771 1071 076 453 3416 788 790 4026 070 348 585 5444 561 6439 7033 283 327 497 743 8025 081 377 997 9622 10135 480 697 744 782 11085 457 478 12103 233 748 13031 068 566 613 629 14010 15639 875 921 17315 910 20673 21622 660 754 22354 704 745 23112 864 24583 27799 861 29064 368 30195 877 945 31256 510 526 675 687 864 911 32211 306 432 812.

Serie VIII à 600 M. 15 36 617 695 835 909 1208 237 2317 505 834 910 3018 056 180 359 510 4282 822 5586 754 803 808 982 6140 718 799 890 914 946 7186 355 435 591 625 842 8495 664 9058 084 135 349 352 404 420 480 943 10068 070 110 115 907 955 969 11611 698 12664 13107 465 542 598 610 977 14019 060 587 677 912 15019 285 970 977 16055 422 659 17277 777 18212 271 372 402 632 19473 490 20067 481 21365 632 22059 758 813 886 898 23156 802 970 24184 25733 758 904 26698 923 27848 855 864 865 992 28043 048 675 29749 986 30341 33170 462 34441 595 769 792 35283 538 37075 077 081 229 327 347 824 38191 39907 40074 091 740 43085 444 46212 844 47159 769 48180 49122 484 880 52253 930 55151 690 57265 526 59656 877 60384 423 966 990 61450 749 830 849 883 62037 572 63008 017 039 043 184 275 279 344 352 386 651 786 815 871 64094 220 266 321 654 660 665 850 65107 397 401 476 640 836 882 893.

Serie IX à 300 M. 455 686 829 1098 255 334 337 497 597 647 2152 571 666 719 874 3026 260 329 725 756 851 4125 263 290 613 738 784 818 827 846 907 939 944 5401 654 665 810 6077 215 370 451 660 667 679 7000 344 532 666 992 993 8137 653 821 936 9315 356 502 924 10193 329 465 487 643 960 980 11073 813 12085 111 509 864 13210 495 14120 486 591 680 15135 146 527 16535 17075 317 410 596 18255 19780 940 20809 860 889 21308 746 971 22400 416 23293 24256 25764 26296 458 27228 348 428 448 999 28306 439 826 29074 104 323 327 30272 311 793 885 960 996 31004 08 265 287 291 509 528 551 555 568 648 689 702 704 705 722 794 893 32072 079 109 175 271 352 434 592 702.

Serie X à 200 M. 130 196 258 261 442 558 979 2026 446 831 3058 470 874 883 896 999 4077 096 133 198 450 485 625 703 731 752 779 804.

3½% Pfandbriefe ohne Buchstaben.

Serie XI à 5000 M. 86 144 145 277 285 352 363 390 597 918 1182 273 480 482 488 575 921 2138 259 409 536 698 708 709 730 786 823 866 3098 216 371 533 780 799 916 4008 071 175 735 5195 203 326 652 6123 751 874 7055 420 8124 305 732 9013 121 215 253 10382 920 11068 112 12544 674 13060 099 130 527 14109 878 940 15204 970 16146 445 17133 19490 802 839 20106 434 21018 22090 888 23044 860 26025 27167 247 319 391 493 526 534 550 602 858 28215 29014 053 399 610 712 30123 391 449 506 528 743 31198 337 473 961 32004 414.

Serie XII à 2000 M. 89 259 318 383 407 491 720 816 875 1046 251 260 282 527 594 734 781 816 2001 541 698 766 3035 808 4662 732 746 884 5118 512 557 653 927 994 6016 031 7468 766 8800 9105 644 10353 794 11393 936 12056 609 13267 889 902 14134 136 692 725 746 747 15047 142 430 511 707 829 950 16156 17061 18463 742 20174 22014 073 109 179 403 922 927 23598 711 846 24012 26356 497 701 866 27210 313 555 566 575 873 29525 689 724 983 31690 32115 602 869.

Serie XIII à 1000 M. 32 78 128 228 229 258 286 472 506 511 636 757 771 935 1055 068 070 172 372 580 823 2105 278 355 401 452 496 667 774 780 812 851 921 938 3023 215 237 636 737 912 947 4500 678 726 866 5311 361 636 860 896 969 6850 7175 645 8041 495 583 719 9111 381 437 461 677 10477 650 834 12251 13096 233 238 445 977 14341 629 715 15325 644 909 16994 17049 241 320 18945 955 19177 20030 231 284 941 21367 422 22390 565 987 23092 25407 26644 696 700 857 27019 297 791 932 28626 867 29278 325 889 30060 165 212 261 586 819 824 31084 225 676 713 32577 620 33121 353 746 778 840 34291 805 911 35142 430 648 848 949 36025 37716 894 38316 39105 40140 349 41126 142 977 993 42169 352 43660 44038 344 399 632 868 45215 265 694 712 922 46043 770 47154 770 48312 546 49318 319 822 50101 140 142 804 51355 546 801 903 52292 529 601 54508 707 55190 196 739 56059 067 57707 834 59057 764 62152 381 63997 64066 322 530 857 65599.

Serie XIV à 500 M. 106 235 674 740 808 838 887 993 1043 063 087 191 205 413 446 450 589 721 881 944 963 2394 605 608 777 987 3753 939 4025 053 280 405 718 786 5505 914 6207 640 7417 8092 303 9431 10428 811 11775 901 938 12159 306 316 416 13102 165 935 14265 15547 878 16028 17803 18066 076 218 304 816 832 19044 127 216 714 20562 21109 474 506 22178 23070 102 470 496 794 858 24449 25242 849 26265 279 985 27184 236 448 933 937 28172 212 780 814 29120 714 716 30410 903 980 31308 318 488 32213 466 475.

Serie XV à 300 M. 32 342 431 474 477 541 703 860 869 890 987 1012 081 086 196 387 465 516 518 553 679 920 2012 181 419 766 971 3168 556 4627 774 934 5199 595 908 6127 212 834 948 7514 994 8695 9397 428 527 10954 11457 564 565 12282 389 750 13337 954 15178 190 463 505 549 846 854 16148 605 720 17502 522 18896 19052 137 822 20680 21232 300 602 722 785 843 903 22046 410 520 828 23320 537 24329 505 786 25345 514 26265 328 27325 449 494 649 663 882 966 28154 293 29498 499 705 30200 208 225 31695 32465 33093.

Serie XVI à 200 M. 186 289 302 757 840 855 915 917 958 1078 301 402 419 576 582 642 685 766 875 2039 195 649 3243 818 866 4367 701 5552 6511 532 647 661 793 967 7482 587 681 732 944 8142 461 629 631 647 10241 690 11002 669 12132 796 13524 606 948 989 14105 242 15258 282 689 769 920 16052 579 17171 512 777 808 18545 984 19088 177 503 20753 21905 911 22006 427 23864 24645 729 915 25035 490 767 27064 270 506 753 28020 371 681 29545 599 652 702 867 902 924 30326 444 32653 33101 130.

Serie XVII à 100 M. 209.

3½% Pfandbriefe Buchstabe C.

Reihe XI à 5000 M. 85 557 615 701 777 993 1309 476 2066 960 3389 520 589 600 845 4143 478.

Reihe XII à 2000 M. 162 275 1086 309 578 709 775 2017 698 3776 891 4414 537 589 753 754.

Reihe XIII à 1000 M. 1161 502 676 2224 646 753 934 3425 4671 709 852 5078 079 201 295 384 419 6122 333 628 830 905 7142 169 203 288 342 489 520 8389 9488 586.

Reihe XIV à 500 M. 92 396 692 1167 208 231 284 2081 716 3066 487 767 4486 577 702 703.

Reihe XV à 300 M. 175 253 378 546 626 789 1582 613 677 992 2254 713 925 930 4237 781 782.

Reihe XVI à 200 M. 191 364 672 858 975 995 1856 913 965 2793 3286 4292 322 406 552 553.

4% Pfandbriefe Buchstabe D.

Reihe I à 10.000 M. 1486.
Reihe II à 5000 M. 5697.
Reihe III à 2000 M. 4753 5724.
Reihe IV à 1000 M. 905 1836 7698.
Reihe V à 500 M. 2568.
Reihe VI à 300 M. 5451.
Reihe VII à 200 M. 5370.
Reihe VIII à 100 M. 50.

4% Pfandbriefe Buchstabe E.

Reihe X à 5000 M. 1598.
Reihe XI à 2000 M. 1685.
Reihe XII à 1000 M. 1217.
Reihe XIII à 500 M. 2155.
Reihe XIV à 300 M. 385.
Reihe XVI à 100 M. 61.

13) Rheinisch-Westfälische Boden-Credit-Bank in Köln u. Berlin, Hypotheken-Pfandbr.

Verlosung am 9. Juni 1911. Zahlbar am 2. Januar 1912.

4% Hypotheken-Pfandbriefe.

Serie I.

Lit. A. à 5000 M. 208 467 687 736 765 1008 022 199.

Lit. B. à 1000 M. 155 315 465 601 867 1233 448 660 858 872 886 971 2086 136 205 238 285 322 739 807 3143 377 460 521 613 744 826 870 4040 171 242 250 318 343 372 400 878 5068 264 420 640 748 821 6001 041 103 134 364 451 659 735 771 7466 489 533 741 766 801 916 8109 922.

Lit. C. à 500 M. 10 346 552 676 761 1011 080 285 404 405 426 612 844 938 2012 076 321 451 623 789 946 3016 068 087 275 872 970 4022 129 356 985 990 5257 280 333 474 490 793 6050 169 257 301 709 826 7016 189 603 605 727 783 960.

Lit. D. à 100 M. 91 409 663 705 832 923 998 1211 252 687 836 843 2013 129 786 3167 356 385 409 450 4065 131 135 154 239 405 544 552 615 687 5001 043 309 351 455 457 877 6038 157 173 381 449 729 964 7146 304 390 512 527 763 830.

Serie III.

Lit. A. à 5000 M. 87 309 515 719 838 983 1097 121 211 529.

Lit. B. à 1000 M. 72 123 144 192 199 523 674 754 1105 180 222 229 498 536 905 2084 136 142 544 727 740 3126 144 226 286 317 513 693 894 4112 122 355 401 425 572 689 801 5014 142 156 319 353 437 656 994 6086 097 134 200 243 296 696 697 7245 311 384 775 959 8106 465 534 655 686 831 985 9041 446 797 10079 498 563 696 807 874.

Lit. C. à 500 M. 195 199 360 381 524 534 707 763 946 1091 192 221.

Lit. D. à 100 M. 109 156 621 764 897 909 973 1026 059 173 258 581 610 838 865 897.

Serie V.

Lit. A. à 5000 M. 40 64 89 234 650 657 813 1178 326.

Lit. B. à 3000 M. 287 664 820 831 937 1016 206 225 630 677 883 2006 040 192 323 433 445 668 684 737.

Lit. C. à 1000 M. 261 524 558 592 1008 064 091 092 270 435 542 563 900 2088 125 449 687 789 817 938 3182.

Lit. D. à 500 M. 122 170 189.

Lit. E. à 300 M. 4 668 680 682 1012 029 046 086 305 352 796 858.

Lit. F. à 100 M. 4 146 190 257 343.

Serie VII.

Lit. A. à 5000 M. 198 240 539 666 705 827 1034 219.

Lit. B. à 3000 M. 138 174 245 460 737 800 847 935 1413 564 833 2061 087 283 400.

Lit. C. à 1000 M. 282 934 1102 562 633 675 917 2206 298 522 604 850 881 898 955 3113 172 261 290 347 404 660 754.

Lit. D. à 500 M. 294 432 857 935 1006 269 560 576.

Lit. E. à 300 M. 265 430 804 907 1004 016 042 139 292 355 542 642 720.

Lit. F. à 100 M. 74 239 262 276 290 496 829 1186 194 609 657.

Serie VII a.

Lit. A. à 5000 M. 130 198 295 517.

Lit. B. à 3000 M. 50 125 582 639 713 763 844.

Lit. C. à 1000 M. 62 91 242 413 494 603 849 872 1791 794 836 867.

Lit. D. à 500 M. 194 291 293 330 632 709.

Lit. E. à 300 M. 114 191 409 430 513 871.

Lit. F. à 100 M. 172 350 498 657 828 889 977.

3½% Hypotheken-Pfandbriefe.

Serie VI.

Lit. A. à 5000 M. 81 194 335 467 550 588 616 1229.

Lit. B. à 3000 M. 32 149 560 849 1287 329 376 427 476 520 547 672 693 2247.

Lit. C. à 1000 M. 613 775 821 871 884 925 1556 831 2010 279 311 697 796 862 940 954 978 3150 372 533 844 930 978 4091.

Lit. D. à 500 M. 80 192 461 545 646 1068 129 160 401.

Lit. E. à 300 M. 223 239 295 324 417 463 779 966 1024 212 940.

Lit. F. à 100 M. 352 472 493 513 796 998 1290 441 482 833.

14) Rumänische 4% innere Staats-Anleihe von 1889.

45. Verlosung am 1/14. Juni 1911. Zahlbar am 1/14. Juli 1911.

à 100 Lei. 186 402 404 447 474 567 677 623 1021 070 072 104 335 431 526 547 859 921 961 2070 224 267 489 551 754 846 872 3086 191 217 237 382 431 458 771 826 884 4030 044 433 531 706 741 787 849 920 978.

à 1000 Lei. 5150 414 460 634 691 754 761 956 6064 190 277 407 462 628 655 777 883 956 7075 252 368 410 453 498 514 695 804 8024 072 242 266 333 400 654 749 766 879 884 912 942 9018 065 142 149 175 336 514 645 602 616 678 857 951 982 10027 199 202 284 351 609 541 747 824 989 11152 184 222 369 435 441 491 614 750 771 797 823 940 975 12047 144 160 348 557 675 747 13081 168 178 409 541 778 830 879 966 14029 164 212 284 339 345 432 880 926 15009 026 097 112 766 887 921 972 994 16145 282 285 376 401 415 528 603 622 720 827 856 977 994 17096 358 425 764 776 781 790 939 941 18040 055 106 156 195 219 292 354 488 615 712 837 854 19008 049 053 054 294 604 664 701 708 796 922 20055 529 697 856 906 982.

à 5000 Lei. 21089 198 338 436 501 612 644 641 735 846 946 22138 432 631 635 656 704 705 759 817 861 932 23128 197 353 359 391 429 550 743 802 24073.

15) Sächsische landschaftl. Pfandbriefe.

4% Pfandbriefe des landschaftlichen Kreditverbandes der Provinz Sachsen.

Die diesjährige Tilgung ist durch Ankauf erfolgt.

16) Vereeniging tot Bevordering van 's Lands Weerbaarheid in Rotterdam, Anleihe v. 1871 (2½ Fl.-Lose).

42. Verlosung am 1. Juli 1911. Zahlbar sofort mit 3½ Fl. für jede Obligation.

Serie 20 363 571 1859 2564 3359 3464 3904 4049 4265 5143 5638 5804 6308 6592 6595 6803 6967 7397 7612.

Peter Tamm.

Eine Dorfgeschichte von Konrad Konradi.

[7. Fortsetzung.]

Martha ging langsam den Weg zurück; sie atmete auf, als sie sich allein wußte. Neben ihr die Felder und Gärten lagen im ersten Schlummer, und durch den dünnen Wolkenschleier blickten einzelne Sterne wie treue Wächteraugen auf sie nieder; aber jenseits des Feldes hinter den Weiden der Landstraße tauchte die volle Mondscheibe am wolkenlosen Horizont empor. Still war es ringsum, nächtlich still, nur die Heimchen zirpten im Grase.

Das Mädchen schlenderte längs des Roggenfeldes hin und ließ die Hand über die noch weichen Stacheln der Aehren streichen. Einmal blieb sie stehen, denn es war ihr, als hörte sie Schritte. Aber niemand kam; sie überzeugte sich, daß sie sich geirrt hatte.

Sie ging eiliger weiter, sah aber von Zeit zu Zeit hinter sich, denn das Gefühl, daß jemand ihr folge, wollte sie nicht verlassen; doch ihre Angst war grundlos, und diese Erkenntnis beruhigte sie allmählich. Sie mäßigte ihre Eile und langte zuletzt wieder beim Schlendertempo an, ließ spielerisch ihr Kleid die Halme des Roggenfeldes streifen und freute sich über das Rauschen des hohen Grases, das ihr Fuß zerteilte.

Langsam erhob sich der Mond über den finsteren Kronen der Weiden und breitete sein fahles Licht über Feld und Busch. — Plötzlich überlief es Martha kalt, denn ein mächtiger Frosch sprang vor ihr über den Weg, und gleichzeitig fühlte sie, wie eine Hand sich auf ihren Arm legte. Hastig wandte sie sich um und trat einen Schritt zurück. „Wer ist da?" rief sie laut. — Aber niemand antwortete, niemand war da, nur das Heimchen zirpte, und ein Käuzchen strich in lautlosem Flug durch die Nacht. — „O Gott! Wäre ich erst zu Hause!" flüsterte sie.

So kam sie wieder an den Holunderbusch, und ihr fielen die Worte ihres Bräutigams ein: „Er wird noch ein Unglück anrichten!" Ihr schauderte. Halb vom Mond bestrahlt, halb schattenhaft finster glich das Gebüsch einem Gespenst, das ihr den Weg vertrat, doch sie nahm sich zusammen, sprach sich dreimal oder viermal die Worte vor: „Es ist ja nur der Holunderbusch", und gewann den Mut, sich dem Gebüsch zu nähern. Alles war still. — Sie machte einen Bogen durch das Roggenfeld, um nur die überhängenden Zweige nicht berühren zu müssen, ihr Herz pochte laut, und angstvoll suchte sie mit ihren Blicken das Labyrinth der Blätter zu durchdringen. Doch alles blieb still, kein Blatt regte sich; unangefochten kam sie vorüber.

Sie bog aufatmend wieder in den Fußweg ein, schalt sich eine Törin und schickte sich beruhigt an, ihren Weg fortzusetzen; da blickte sie noch einmal scheu zurück und glaubte im Mondschein eine Gestalt zu bemerken, die sich tief in den Busch hineingelehnt hatte, so daß die Blätter sie fast verhüllten. Sie schrie laut auf vor Schreck, doch der im Versteck trat hervor, und jetzt erkannte sie ihn.

„Peter!" rief sie und ging auf ihn zu. „Was willst du hier? Wie kommst du hierher?"

„Mir hat keiner verboten, hier zu stehen," entgegnete Peter trotzig und spielte mit einem Holunderblatt, das er sich abgepflückt hatte.

„Aber du erschreckst mich — ich hätte vor Schreck sterben können."

Der Schäfer bückte sich nach dem Blatt, das ihm entfallen war.

„Wenn du stürbst, es wäre noch nicht das Schlimmste."

„Schäm' dich!" rief Martha. „Einem Menschen den Tod zu wünschen!"

Peter sagte nichts darauf, sah sie aber bedeutsam an, und sein Blick machte sie verlegen.

„Du willst fort von uns. Warum willst du nicht bleiben?" fragte sie, um irgend etwas zu sagen, und erst als das Wort heraus war, fiel ihr ein, daß sie ein Geheimnis berührt hatte, das sie fürchtete. Aber jetzt war es zu spät.

„Ja, ich will fort," entgegnete Peter. „Weil du den Lindenbauer heiratest, muß ich fort."

„Mußt du fort? Was hat dir Wilhelm Lindenbauer getan?"

„Er hat mir nichts getan, aber wenn du seine Frau wirst, kann ich nicht hier bleiben."

Sie sah zur Erde nieder. „Wen soll ich denn heiraten?" fragte sie leise. Aber Peter fuhr, ohne auf ihr Flüstern zu achten, fort:

„Und wenn er der beste wäre, ich könnte nicht bleiben, denn es wird alles anders werden, du wirst eine andere werden zu mir, und ich werd' ein anderer sein für dich. Es ist alles vorbei, alles vorbei."

„Nein es ist nicht vorbei" — unterbrach Martha ihn lebhaft — „und nichts wird anders werden. Wir haben zusammen gespielt, als wir Kinder waren, und nachher sind wir gute Freunde geworden. Warum soll sich das ändern?"

„Warum?" rief er und trat ihr näher. „Weil du den Lindenbauer heiratest, weil ich zusehen muß, daß du seine Frau wirst. Aber ich will es nicht sehen, ich will, daß du ihm dein Wort zurückgibst, ich will . . . Sonst ist kein Glück mehr für mich in diesem Hause."

„Peter!" bat Martha. Ihre Stimme zitterte. Doch er ließ sich nicht unterbrechen, denn ihn quälte noch ein Geständnis. Es mußte heraus.

„Wenn du mir sagtest, daß du mich nicht leiden kannst, es wäre schlimm für mich, aber ich würde es ertragen. Ich würde anderswo mein Glück suchen, denn die Welt ist groß. Aber ich weiß, du kannst mich leiden, und du heiratest doch den anderen — das übersteh ich nicht."

Marthas Blicke suchten wieder den Erdboden. Sie begriff das verhüllte Geständnis, hörte die verhaltene Leidenschaft aus seinen Worten heraus, spürte, daß sie beide schon andere geworden waren, er für sie und sie für ihn; sie fürchtete sich. Aber er faßte ihre Hand und hielt sie fest.

„Es ist spät, ich muß nach Hause," sagte sie fröstelnd.

„Du hast noch lange Zeit, zu schlafen" — erwiderte er. „Erst muß ich wissen, warum du ihn nimmst, wenn du mich leiden kannst."

„Peter!" bat sie wieder.

„Geh hin!" — rief er. „Sag ihm, daß er sich eine andere Frau suchen soll, daß du einen anderen lieber hast. Geh hin und sag's ihm. Heute noch, oder morgen. Geh hin! Willst du?"

Sie wandte sich ab und versuchte, ihm die Hand zu entziehen, er aber ergriff nun auch noch ihre Linke. Einen Augenblick sahen beide einander ins Auge, dann zog er sie zu sich heran, und sie ließ es willenlos geschehen. Er umfaßte sie mit beiden Armen, und sie wehrte sich nicht: sie vergaß sich, denn seine Leidenschaft riß sie fort. Da fühlte sie seine Wange an der ihrigen, wie seine Lippen ihren Mund suchten, und die Besinnung kehrte zurück.

„Laß mich los!"

Er drückte sie fester.

„Ich rufe die Leute. Laß mich los!"

Seine Arme gaben nach. Er wollte sprechen, aber Martha stieß ihn von sich, daß er zurücktaumelte, und floh davon.

Sie lief, wie von Teufeln verfolgt, sah nicht rechts und nicht links, sah auch nicht hinter sich, ob er ihr folgte. Erst als sie den Hof erreicht hatte, blieb sie einen Augenblick stehen und schöpfte Atem.

Sie trat in die Stube, ihre Wangen glühten, ihre Glieder zitterten noch. Am Tisch saßen ihre Eltern bei der Lampe, und beide sahen sehr ernst aus: sie mochten über wichtige Dinge gesprochen haben.

„Peter muß fort!" rief Martha erregt.

Die Eltern sahen sie verwundert an.